आज का पुरुषार्थ 10 March 2023

<u>Source</u>: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

सार – *"ब्रह्मा बाबा ने जिस तरह जीवन में समर्पण भाव अपनाया .. "मेरा हर कर्म तेरे लिए, मेरा सम्पूर्ण जीवन तुम्हारे लिए"... उसी तरह हमें भी समर्पण भाव अपनाना है "*

हमें बाप समान बनना है। **ब्रह्मा बाबा** को फालो करना है और शिवबाबा के समान निराकार बनना है। ब्रह्मा समान **निर्विकारी, निरहंकारी, कल्याणकारी, शुभ भावनाओं से भरपूर, सम्पूर्ण पवित्र बनना है।**

तो बाबा ने जिस तरह जीवन में समर्पण भाव अपनाया, उसी तरह हमें भी समर्पण भाव अपनाना है। इसमें कन्फ्यूज होने की जरूरत नही कि हम सबकुछ कैसे छोड़ दे अपना?

समर्पण भाव .. " सबकुछ तेरा "

मन में जो मेरा पन है, जो पदार्थो में आसक्ति है, जो यह feeling है →

" सबकुछ मेरा है, बच्चे भी मेरा, धन भी मेरा, मकान भी मेरा, बिजनेस भी मेरा .. "

.. इससे अपनी बुद्धि को निकालकर, सबकुछ तेरा, ऐसी good feeling कर देनी है।

इसमें बहुत अच्छा अभ्यास आज सारा दिन करेंगे →

" मेरा हर कर्म तेरे लिए, मेरा सम्पूर्ण जीवन तुम्हारे लिए, मैं हर एक कर्म भी तुम्हारे लिए करूँगा, मेरा हर संकल्प भी तुम्हारे लिए होगा "

सबसे सूक्ष्म समर्पणता तो मन-बुद्धि की समर्पणता है। अपनी भावनाओं की समर्पणता है। अपना प्यार भी बाबा के लिए सम्पूर्ण रूप से **समर्पित।**

" हमारा सम्पूर्ण आकर्षण एक में, जो कुछ हमें लेना है, वह उस एक से ही लेना है "

तो मेरा हर संकल्प वही हो, जो बाबा को प्रिय है। ऐसा सोचे कि ..

" मुझे हर **संकल्प** और **बोल** ऐसा करना है अपना, जिसे बाबा स्वीकार करे .. जिसका भोग बाबा को लगाया जा सके .. जिसे सुनकर, जिसे देखकर भगवान प्रसन्न हो जाये "

यह है मन की समर्पणता।

और इसको अगर सहज भाव से करना है तो →

" हमें बोल वही बोलने है, जो बाबा की आज्ञा है .. हमें संकल्प वही करने है जो बाबा की इच्छा है "

तो **धन** को भी समर्पित करेंगे। **मन** को भी समर्पित करेंगे। **बुद्धि** को भी समर्पित करेंगे। देह के **सम्बन्धों** को भी समर्पित करेंगे। अपने **कर्म** को भी समर्पित करेंगे। और **कर्म के परिणाम** को भी समर्पित करेंगे।

यह बहुत सूक्ष्म और सुन्दर बात है कि →

" जो कर्म हमने किया, उसका परिणाम चाहे कैसा भी निकला हो .. हमारी इच्छा की अनुकूल या प्रतिकूल .. हमारी एक्सपेक्टेशन्स के अनुकूल या प्रतिकूल "

.. जो भी परिणाम निकला उसे भी बाबा को अर्पित करके अपने को निरसंकल्प कर देना चाहिए।

मान लो →

" हमारी प्रशंसा हुई वह भी बाबा को अर्पित .. हमारी ग्लानि हो गई वह भी बाबा को अर्पित .. हमें बहुत सफलता मिली वह भी प्रभु अर्पण .. हमें सफलता न मिली वह भी प्रभु के हवाले "

इससे हम बहुत **निश्चिंत** रहेंगे। और कर्म की प्रभाव से आत्मा मुक्त हो जायेगी। यह निर्लिप्त अवस्था है। जो बहुत सुन्दर स्थिति है आध्यात्म की। इसका हमें बहुत अच्छी प्रैक्टिस करते चलना है।

तो आज सारा दिन ..

" मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए है "

यह संकल्प ..

दूसरा ..

" मेरा यह तन तुमको अर्पण "

देखो जैसे बाबा हमारे सामने खड़ा है, बापदादा। और हम अपना तन बाबा को दे रहे है ..

" तो बच गई मैं चमकती हुई आत्मा "

और फिर अभ्यास करे →

" तन बाबा को देकर मैं आत्मा उड़ चली अपने प्राणेश्वर के पास और पहुँच गई परमधाम में ..

उनको टच किया .. उनकी सम्पूर्ण शक्तियाँ मुझमें समाने लगी "

" उनकी शक्तियों को स्वयं में भरकर मैं आत्मा पुनः आ गई नीचे .. यह देह है मेरा .. जो मैंने बाबा को दे दिया था .. फिर से मैंने इसमें प्रवेश कर लिया "

और फिर यह देह बाबा ने मुझे वापिस दिया कि →

" लो बच्चे इसमें प्रवेश करके तुम **विश्वकल्याण** का कार्य करो .. इस संसार में निर्लिप्त (detached) भाव से विचरण करो "

फिर ..

" मैं आत्मा यह देह बाबा को दे चली परमधाम .. स्वयं में उनकी शक्तियाँ भरकर नीचे वापिस आ गई "

यह ड्रिल करेंगे और बहुत सुन्दर आज इसको एन्जॉय करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Main: www.shivbabas.org